हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G, Sem II

विषय — राष्ट्रीय काव्य-धारा का शेष भाग :—

अतीत का गौरव गान :—

आधुनिक काल की हिन्दी-कविता में राष्ट्रीयता की भावनाओं से भरपूर अतीत की गौरव-गाथाओं का एक विशाल कोष दिखाई देता है। अनेक कवियों ने भारत के स्वर्णिम अतीत का यशोगान करते हुए वर्तमान दुर्दशा के प्रति राष्ट्र को सजग कराया है, और देशवासियों को प्राचीन गौरव की प्राप्ति के लिए उत्साहित बनाया है। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' में राष्ट्रीयता की भावना अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची दिखाई देती है। 'दिनकर' ने 'हिमालय' कविता में अतीत का गौरवगान और वर्तमान की दुर्गति का चित्रण किया है। निराला ने अपनी 'दिल्ली' कविता में महाभारत काल से लेकर मुगलों के राज्यकाल तक देश के

WEDNESDAY

इतिहास का स्पष्ट चित्रण किया है।

इन कवियों के समक्ष एक ही प्रश्न चुनौती के रूप में था कि पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की तुलना में भारतीय सभ्यता और संस्कृति कहाँ ठहरती है। भारत का गौरव अतीत में छिपा था। अतः अतीत से ही वीरता, धीरता, स्वाभिमान, संस्कृति आदि दर्शाकर इन कवियों ने एक ओर भारतीयों के मन से आत्महीनता का भाव दूर किया और दूसरी ओर विदेशी संस्कृति की तुलना में भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल प्रेरणादायक रूप दिखाया।

उदाहरण :— "देखो हमारा विश्व में कोई नहीं उपमान था।
नर देव थे, और भारत देवलोक समान था।"

सांस्कृतिक नव-जागरण — अपनी संस्कृति की श्रेष्ठता पर गर्व राष्ट्रीय-चेतना का सुपुष्ट आधार है। अतीत में भारत की संस्कृति अत्यन्त समुन्नत रही है। मध्यकाल में ऐतिहासिक कारणों से, भारतीय संस्कृति का ह्रास हो गया था। आधुनिक काल के कवियों ने अपनी निर्मल काव्य-धारा से सांस्कृतिक, वर्तमान के लिए प्रेरणा स्रोत की था। इसलिए अतीत की सांस्कृतिक श्रेष्ठता का बारम्बार उल्लेख कर, उसी उच्च स्थान को दुबारा प्राप्त

करने की अभिलाषा इनकी कविताओं में प्रकट हुई है
उदाहरण — " वह आर्यधर्म, वह शिरोधार्य वैदिक समता,
पाटलीपुत्र की कौमुदी का अस्तमय?
आ रही याद, वह विजय शकों से अप्रमाद,
वह महावीर विक्रमादित्य का अभिनन्दन।"

साम्प्रदायिकता का विरोध — हिन्दी के आधुनिक कविता में पहली बार साम्प्रदायिकता से दूर, सम्पूर्ण देश के साथ एकाकार राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई। कवियों ने यह स्पष्ट समझा है कि साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई के भेद नितान्त सतही है और सारे भारतीय समान आदर्शों से बंधे होने के कारण एक हैं। यह बोध कविताओं में व्यक्त होकर एकता का कारण बना है।

राष्ट्रीय एकता का गायन :— इस काल के कवियों ने राष्ट्रीय एकता की परिचायक अनेक सुन्दर रचनाएँ की हैं। 'एक भारतीय आत्मा' शीर्षक 'माखनलाल चतुर्वेदी' जी की सशक्त कविता है। इस कविता में उन्होंने देश-प्रेम के लिए आत्मोत्सर्ग की भाव प्रेरणा दी है —

" मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।"

**वर्तमान दुर्दशा का अंकन चित्र** :— आधुनिक कविता में देश की गरीबी, काहिली, गुलामी, जड़ता आदि पर प्रकाश डालने वाले गीतों की खूब रचना की गई है। कवियों ने जो लोग पश्चिमी सभ्यता की चमक-दमक में फंस कर अपनी संस्कृति को क्रमशः विमुख होते जाते हैं, उन भारतीयों पर भी लेखनी चलाई है। ~~उदाहरण~~ —

'चरितहीन, डरपोक, अशिक्षित,
प्रजा अधीन रहेगी।
है यह भाव निरंकुश नृप का,
सदा अनीति रहेगी।"

इस संदर्भ में भारतेन्दु का सुप्रसिद्ध गीत "आवहु सब मिलिकै, रोवहु भारत-भाई।
हा-हा, भारत दुर्दशा न देखी जाई।।"
विशेष उल्लेखनीय है।

**स्वतंत्रता संग्राम का वर्णन** — देश को स्वतंत्र कराने का आन्दोलन राष्ट्रीयता का ही मूर्त रूप है। कवियों ने स्वतंत्रता संग्राम का जी खोलकर स्वागत किया है। मैथिलीशरण गुप्त 'भारत-भारती' में कहते हैं :— 'जकड़ी है जंजीरों से माँ, उसे छुड़ाने को आओ,
आशीर्वाद यही है, विजय पताका
फहराओ।"

जयशंकर प्रसाद हिमालय की चोटियों से आ रहे स्वतंत्रता के संदेश का इन शब्दों में अभिनन्दन करते हैं :—

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,
प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला,
स्वतंत्रता पुकारती।"

स्पष्ट है कि स्वतंत्रता की प्राप्ति तथा रक्षा आधुनिक कविता का प्रधान स्वर है। इस प्रकार राष्ट्रचिन्तन की धारा अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होती रही है। हमें यह भी प्रयास करना है कि यह धारा इसी रूप में अक्षुण्ण और जाग्रत रहे।